Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

11

डाइट की शिक्षा संस्थाओं के शिक्षकों के विकास में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन

डॉ. प्रतिमा गुप्ता
शोध पर्यवेक्षक प्रोफेसर
शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा विभाग
श्याम विश्वविद्यालय, लालसोट दौसा, राजस्थान

वीरेन्द्र कुमार त्रिपाठी,
पीएच.डी. शोधार्थी
शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा विभाग
श्याम विश्वविद्यालय, लालसोट दौसा, राजस्थान

सार सक्षेप :-
प्रस्तुत शोध डाइट की शिक्षा संस्थाओं के शिक्षकों के विकास में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के विभागाध्यक्ष, D.El.Ed./ BSTC प्रशिक्षणार्थियों एवं सेवारत शिक्षकों के अभिमत पर केंद्रित है। शोध में राजस्थान राज्य की चित्तौड़गढ़ डाइट से विभागाध्यक्ष, D.El.Ed./ BSTC प्रशिक्षणार्थियों का सोद्धेश्य चयन विधि द्वारा व सेवारत शिक्षकों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से किया गया है। चित्तौड़गढ़ डाइट से 10 डाइट के विभागाध्यक्ष/व्याख्याता, एवं 50 D.El.Ed./ BSTC प्रशिक्षणार्थी का एवं प्रशिक्षण प्राप्त सेवारत 176 शिक्षकों का चयन 44 प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों से किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में डाइट की शिक्षा संस्थाओं के शिक्षकों के विकास में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करने के लिए स्वनिर्मित खुली प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। प्रतिशत सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग दत्त विश्लेषण के लिए किया गया है। प्रस्तुत शोध के परिणाम स्पष्ट करते है कि समग्र रूप से क्रमशः डाइट व्याख्याताओं, बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों एवं सेवारत शिक्षकों ने डाइट की शिक्षा संस्थाओं के विकास में आने वाली चुनौतियों के अंतर्गत प्रशिक्षण की गुणवत्ता संबंधी चुनौतियों, नई शिक्षण पद्धतियों को समझने और उन्हें अपने शिक्षण में लागू करने संबंधी चुनौतियों एवं नई तकनीकों का उपयोग करने में कठिनाई संबंधी चुनौतियों का सर्वाधीक सामना किया हैं।

समस्या की पृष्ठ भूमि, औचित्य एवं महत्त्व :–
सरकार ने जिन अभिशंसा के तहत डाइट की स्थापना की है, डाइट इन कार्यो में कहाँ तक सफल हुई? प्रशिक्षण कार्यक्रमों व नवाचारों को कहाँ तक लागू कर रही है? इस जानकारी की दृष्टि से भी समस्या के चयन का औचित्य दिखाई देता है। यह शोध कार्य शिक्षकों की दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि विद्यालय में शिक्षा नीति क्रियान्वयन का कार्य शिक्षक का होता है। डाइट शिक्षा संस्थाओं की शिक्षा के विकास में चुनौतियों की जानकारी होने से विद्यालय में सभी गतिविधियाँ सुचारू रूप से गतिमान हो सकेगी व विद्यार्थी सही ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। जिन उद्धेश्यों को लेकर डाइट की स्थापना की गई है वह इन उद्धेश्यों की प्राप्ति में कहाँ तक सफल हुई है तथा डाइट के कार्यक्रमों को आयोजित करने संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव प्राप्त करने में भी समस्या का चयन महत्वपूर्ण है। डाइट की शिक्षा संस्थाओं के शिक्षकों के विकास में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन एक सावधानी युक्त क्रमबद्ध, वैज्ञानिक अध्ययन है जिसके निष्कर्ष सम्बन्धित पक्षों को आलोकित करेंगे। प्रत्येक शोध कार्य का अपना विशिष्ट महत्व होता है। अतः यह अध्ययन वर्तमान में निश्चिततः लाभकारी है।

शोध के उद्देश्य :–
1. डाइट की शिक्षा संस्थाओं के शिक्षकों के विकास में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।
2. डाइट द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की चुनौतियों का अध्ययन करना।
3. डाइट द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सेवारत शिक्षकों की चुनौतियों का अध्ययन करना।

समस्या का परिभाषीकरण :–
1. डाइट :– जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान से तात्पर्य उस संस्थान से है जो प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शिक्षा के उन्नयन के लिए गुणात्मक सुधार व शैक्षिक नवाचार एवं प्रयोग संबंधी कार्य करती है तथा प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों में व्यवसायिक दक्षता बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण देती है। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) में आठ प्रभाग हैं, जो इस प्रकार हैं–(1) सेवा पूर्व प्राथमिक शिक्षा शिक्षक प्रशिक्षण प्रभाग (2) सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण क्षेत्र अन्तक्रिया, नवाचार समन्वय (3) अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा एवं जिला सन्दर्भ इकाई प्रभाग (4) योजना एवं प्रबन्ध प्रभाग (5) शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग (6) कार्यानुभव प्रभाग (7) पाठ्यक्रम शिक्षण सामग्री विकास एवं मूल्यांकन (8) प्रशासनिक शाखा प्रभाग। प्रस्तुत शोध में डाइट द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सेवारत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन करने हेतु डाइट के आठों प्रभागों का अध्ययन किया गया।

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

2. चुनौतियाँ :–चुनौतियों से तात्पर्य उन सभी परिस्थितियों अथवा प्रश्नों से है जिनको समझना अथवा जिनका समाधान करना मुश्किल होता है। प्रस्तुत शोध में चुनौतियों से तात्पर्य डाइट के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में आने वाली बाधाओं व समस्याओं से है।

परिसीमन :– प्रस्तुत शोधकार्य का क्षेत्र राजस्थान राज्य के चित्तौड़गढ जिले के डाइट विभागाध्यक्ष/व्याख्याता, D.El.Ed./ BSTC प्रशिक्षणार्थियों एवं 11 ब्लॉक के 44 प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों तक ही सीमित रखा गया है।

न्यादर्श :– प्रस्तुत शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के विभागाध्यक्ष, D.El.Ed./ BSTC प्रशिक्षणार्थियों का सोद्धेश्य चयन विधि द्वारा व सेवारत शिक्षकों का चयन (यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से) किया गया है। चित्तौड़गढ़ डाइट से 10 डाइट के विभागाध्यक्ष/व्याख्याता, एवं 50 D.El.Ed./ BSTC प्रशिक्षणार्थी का एवं प्रशिक्षण प्राप्त सेवारत 176 शिक्षकों का चयन 44 प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों से किया गया है।

विधि :– प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया।

उपकरण :प्रस्तुत अध्ययन में डाइट की शिक्षा संस्थाओं के शिक्षकों के विकास में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करने के लिए स्वनिर्मित खुली प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय तकनीक :–प्रस्तुत शोध कार्य में दत्त विश्लेषण के लिए प्रतिशत सांख्यिकीय तकनीक को उपयोग में लिया गया।

दत्त विश्लेषण :–

उद्देश्य संख्या–1 डाइट की शिक्षा संस्थाओं के शिक्षकों के विकास में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 1 डाइट की शिक्षा संस्थाओं के शिक्षकों के विकास में आने वाली चुनौतियाँ

क्र.सं.	डाइट की शिक्षा संस्थाओं के शिक्षकों के विकास में आने वाली चुनौतियाँ	डाइट व्याख्याता N=10	
		संख्या	प्रतिशत
1	प्रशिक्षण की गुणवत्ता संबंधी चुनौती	9	90
2	विभिन्न पृष्ठभूमि और अनुभव वाले शिक्षकों को प्रशिक्षित करना	8	80
3	प्रशिक्षण की सामग्री और संसाधन का प्रबंधन करना	7	70
4	शिक्षकों की आवश्यकताओं का आकलन करना	7	70
5	प्रशिक्षण के परिणामों का मापन करना	7	70
6	प्रशिक्षण का नियमित मूल्यांकन करना	7	70
7	संसाधनों की कमी	6	60
8	प्रशिक्षण की प्रासंगिकता बनाए रखना	6	60
9	प्रशिक्षण के प्रभाव का मूल्यांकन करने और अनुवर्ती कार्रवाई करने की चुनौती	6	60
10	शिक्षकों की रुचि और प्रेरणा बनाए रखना एक चुनौती	5	50
11	प्रशिक्षण की अवधि और समय का प्रबंधन करना	5	50
12	प्रशिक्षकों की क्षमता और अनुभव की चुनौती	5	50
13	प्रशिक्षण की पहुंच और सुविधा सुनिश्चित करना	5	50
14	प्रशिक्षण की प्रभावशीलता सुनिश्चित करना	4	40
15	शिक्षकों का समर्थन और मार्गदर्शन करना एक चुनौती	4	40
16	प्रशिक्षण की निरंतरता सुनिश्चित करना	4	40
17	प्रशिक्षण की पहुंच में असमानता को दूर करना	4	40
18	प्रशिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताएं को पूरा करना	3	30
19	प्रशिक्षण के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना	3	30
20	प्रशिक्षण के परिणामों का उपयोग करके शिक्षकों के विकास में सुधार करना एक चुनौती	2	20

व्याख्या :–

सारणी संख्या 1 से निम्न परिणाम परिलक्षित होते हैं :–

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

डाइट की शिक्षा संस्थाओं के शिक्षकों के विकास में आने वाली चुनौतियों के अंतर्गत प्रशिक्षण की गुणवत्ता संबंधी चुनौतियों का प्रतिशत सर्वाधीक 90 प्रतिशत प्राप्त हुआ। अन्य चुनौतियाँ इस प्रकार है– विभिन्न पृष्ठभूमि और अनुभव वाले शिक्षकों को प्रशिक्षित करना, संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण की प्रासंगिकता बनाए रखना, प्रशिक्षण की सामग्री और संसाधन का प्रबंधन करना, शिक्षकों की आवश्यकताओं का आकलन करना, प्रशिक्षण के परिणामों का मापन करना, प्रशिक्षण का नियमित मूल्यांकन करना, प्रशिक्षण के प्रभाव का मूल्यांकन करने और अनुवर्ती कार्रवाई करने की चुनौती, शिक्षकों की रुचि और प्रेरणा बनाए रखना एक चुनौती, प्रशिक्षण की अवधि और समय का प्रबंधन करना, प्रशिक्षकों की क्षमता और अनुभव की चुनौती, प्रशिक्षण की पहुंच और सुविधा सुनिश्चित करना, प्रशिक्षण की प्रभावशीलता सुनिश्चित करना, शिक्षकों का समर्थन और मार्गदर्शन करना एक चुनौती, प्रशिक्षण की निरंतरता सुनिश्चित करना, प्रशिक्षण की पहुंच में असमानता को दूर करना, प्रशिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताएं को पूरा करना, प्रशिक्षण के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना एवं प्रशिक्षण के परिणामों का उपयोग करके शिक्षकों के विकास में सुधार करने संबंधी चुनौतियाँ पायी गयी।

उद्देश्य संख्या–2 डाइट द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की चुनौतियों का अध्ययन।

सारणी संख्या 2 डाइट द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की चुनौतियाँ

क्र.सं.	डाइट द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की चुनौतियाँ	बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थी N=50	
		संख्या	प्रतिशत
1	नई शिक्षण पद्धतियों को समझने और उन्हें अपने शिक्षण में लागू करने में चुनौती।	44	88
2	अपने विषय में विशेषज्ञता हासिल करने और उसे प्रभावी ढंग से पढ़ाने में चुनौती।	41	82
3	समय को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में चुनौती।	38	76
4	आत्मविश्वास को बढ़ाने और प्रभावी ढंग से पढ़ाने में चुनौती।	36	72
5	कक्षा प्रबंधन में चुनौती।	35	70
6	मूल्यांकन और आकलन करने में चुनौती।	33	66
7	प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करने में चुनौती।	31	62
8	संसाधनों की कमी के कारण चुनौती जैसे कि पुस्तकालय और प्रौद्योगिकी की कमी।	22	44
9	भाषा और सांस्कृतिक अंतर के कारण चुनौती।	18	36
10	प्रैक्टिकल अनुभव प्राप्त करने में चुनौती।	16	32
11	अन्य शिक्षकों और विशेषज्ञों के साथ नेटवर्किंग करने में चुनौती।	14	28
12	आधुनिक तकनीक का उपयोग करने में चुनौती।	13	26
13	विद्यार्थियों की विविधता के कारण चुनौती।	11	22
14	शिक्षकों की भूमिका और जिम्मेदारियों को समझने में चुनौती।	10	20
15	पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को समझने और उनका प्रभावी ढंग से उपयोग करने में चुनौती।	8	16
16	मूल्यांकन और परीक्षा प्रणाली को समझने और उसका प्रभावी ढंग से उपयोग करने में चुनौती।	7	14
17	शिक्षण के नए तरीकों को समझने और उनका प्रभावी ढंग से उपयोग करने में चुनौती।	7	14
18	कक्षा में अनुशासन बनाए रखने में चुनौती।	6	12
19	विद्यार्थियों को प्रेरित करने में चुनौती।	4	8
20	शिक्षकों के पेशेवर विकास में चुनौती।	2	4

व्याख्या :– सारणी संख्या 2 से निम्न परिणाम परिलक्षित होते हैं :–

डाइट द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की चुनौतियों के अंतर्गत नई शिक्षण पद्धतियों को समझने और उन्हें अपने शिक्षण में लागू करने संबंधी चुनौतियों का प्रतिशत सर्वाधीक 88 प्रतिशत प्राप्त हुआ। अन्य चुनौतियाँ इस प्रकार है– अपने विषय में विशेषज्ञता हासिल करने और उसे प्रभावी ढंग से पढ़ाने में चुनौती, समय को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में चुनौती, आत्मविश्वास को बढ़ाने और प्रभावी ढंग से पढ़ाने में चुनौती, कक्षा प्रबंधन में चुनौती, मूल्यांकन और आकलन करने में चुनौती, प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करने में चुनौती, संसाधनों की कमी के कारण चुनौती जैसे कि पुस्तकालय और प्रौद्योगिकी की कमी, भाषा और सांस्कृतिक अंतर के कारण चुनौती, प्रैक्टिकल अनुभव प्राप्त करने में चुनौती, अन्य शिक्षकों और विशेषज्ञों के साथ

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

नेटवर्किंग करने में चुनौती, आधुनिक तकनीक का उपयोग करने में चुनौती, विद्यार्थियों की विविधता के कारण चुनौती, शिक्षकों की भूमिका और जिम्मेदारियों को समझने में चुनौती, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को समझने और उनका प्रभावी ढंग से उपयोग करने में चुनौती, मूल्यांकन और परीक्षा प्रणाली को समझने और उसका प्रभावी ढंग से उपयोग करने में चुनौती, शिक्षण के नए तरीकों को समझने और उनका प्रभावी ढंग से उपयोग करने में चुनौती, कक्षा में अनुशासन बनाए रखने में चुनौती, विद्यार्थियों को प्रेरित करने एवं शिक्षकों के पेशेवर विकास में चुनौती।

उद्देश्य संख्या–3 डाइट द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सेवारत शिक्षकों की चुनौतियों का अध्ययन।

सारणी संख्या 3 डाइट द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सेवारत शिक्षकों की चुनौतियाँ

क्र.सं.	डाइट द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सेवारत शिक्षकों की चुनौतियाँ	सेवारत शिक्षक N=176	
		संख्या	प्रतिशत
1	नई तकनीकों का उपयोग करने में कठिनाई।	152	86.36
2	प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान समय प्रबंधन करना।	108	61.36
3	विषय की जटिलता को समझने में कठिनाई।	92	52.27
4	प्रशिक्षण सामग्री की समझ में कठिनाई।	88	50
5	प्रशिक्षक की शैली के अनुकूल न होना।	72	40.91
6	समूह कार्य में सहयोग करने में कठिनाई।	68	38.64
7	प्रश्न पूछने में हिचकिचाहट।	68	38.64
8	नई जानकारी का एकीकरण करने में कठिनाई।	62	35.23
9	प्रशिक्षण कार्यक्रम की लंबाई और थकान।	61	34.66
10	प्रशिक्षण स्थल की सुविधाओं की कमी।	55	31.25
11	प्रशिक्षक की विशेषज्ञता पर संदेह।	45	25.57
12	प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रासंगिकता पर संदेह।	42	23.86
13	नई पद्धतियों का उपयोग करने में कठिनाई।	42	23.86
14	नई जानकारी को छात्रों को समझाने में कठिनाई।	40	22.73
15	प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन करने में कठिनाई।	38	21.59
16	प्रशिक्षण कार्यक्रम की लागत और बजट की कमी।	32	18.18
17	प्रशिक्षक की उपलब्धता में कमी।	28	15.91
18	प्रशिक्षण कार्यक्रम का समय और तिथि की समस्या।	24	13.64
19	प्रशिक्षण सामग्री की गुणवत्ता में कमी।	22	12.5
20	प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्य को समझने में कठिनाई।	21	11.93
21	प्रशिक्षण कार्यक्रम में भागीदारी को बढ़ावा देने में कठिनाई।	21	11.93
22	प्रशिक्षण कार्यक्रम के बाद अनुवर्ती कार्रवाई करने में कठिनाई।	17	9.66
23	प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभाव को मापने में कठिनाई।	16	9.09
24	प्रशिक्षण कार्यक्रम में सुधार करने में कठिनाई।	14	7.95
25	प्रशिक्षण कार्यक्रम की निरंतरता और समर्थन में कमी।	8	4.54

व्याख्या :– सारणी संख्या 3 से निम्न परिणाम परिलक्षित होते हैं :–

डाइट द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सेवारत शिक्षकों की चुनौतियों के अंतर्गत नई तकनीकों का उपयोग करने में कठिनाई संबंधी चुनौतियों का प्रतिशत सर्वाधीक 86.36 प्रतिशत प्राप्त हुआ। अन्य चुनौतियाँ इस प्रकार है– समय प्रबंधन, विषय की जटिलता, प्रशिक्षण सामग्री की समझ में कठिनाई, प्रशिक्षक की शैली के अनुकूल न होना, समूह कार्य में सहयोग करने में कठिनाई, प्रश्न पूछने में हिचकिचाहट, नई जानकारी का एकीकरण करने में कठिनाई, प्रशिक्षण कार्यक्रम की लंबाई और थकान, प्रशिक्षण स्थल की सुविधाओं की कमी, प्रशिक्षक की विशेषज्ञता पर संदेह, प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रासंगिकता पर संदेह, नई पद्धतियों का उपयोग करने में कठिनाई, नई जानकारी को छात्रों को समझाने में कठिनाई, प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन करने में कठिनाई, प्रशिक्षण कार्यक्रम की लागत और बजट की कमी, प्रशिक्षक की उपलब्धता में कमी, प्रशिक्षण कार्यक्रम का समय और तिथि की समस्या, प्रशिक्षण सामग्री की गुणवत्ता में कमी, प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्य को समझने में कठिनाई, प्रशिक्षण कार्यक्रम में भागीदारी को बढ़ावा देने में कठिनाई, प्रशिक्षण कार्यक्रम के बाद अनुवर्ती कार्रवाई करने में कठिनाई, प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभाव को मापने में कठिनाई, प्रशिक्षण कार्यक्रम में सुधार करने में कठिनाई एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम की निरंतरता और समर्थन में कमी।

निष्कर्ष :– समग्र रूप से क्रमशः डाइट व्याख्याताओं, बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों एवं सेवारत शिक्षकों ने डाइट की शिक्षा संस्थाओं के विकास में आने वाली निम्नलिखित चुनौतियों का अधिक सामना किया है–

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved

1. डाइट की शिक्षा संस्थाओं के शिक्षकों के विकास में आने वाली चुनौतियों के अंतर्गत प्रशिक्षण की गुणवत्ता संबंधी चुनौतियों का प्रतिशत सर्वाधीक 90 प्रतिशत प्राप्त हुआ।
2. डाइट द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की चुनौतियों के अंतर्गत नई शिक्षण पद्धतियों को समझने और उन्हें अपने शिक्षण में लागू करने संबंधी चुनौतियों का प्रतिशत सर्वाधीक 88 प्रतिशत प्राप्त हुआ।
3. डाइट द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सेवारत शिक्षकों की चुनौतियों के अंतर्गत नई तकनीकों का उपयोग करने में कठिनाई संबंधी चुनौतियों का प्रतिशत सर्वाधीक 86.36 प्रतिशत प्राप्त हुआ।

शैक्षिक निहितार्थ :–

डाइट की शिक्षा संस्थाओं के विकास में आने वाली संभावित चुनौतियों के अंतर्गत प्रशिक्षण की गुणवत्ता संबंधी चुनौतियों का अधिक सामना किया है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सम्बन्धी चुनौतियों को कम करने के लिए निर्देशन कार्यक्रम, पर्यवेक्षण कार्यक्रम, पाठयोजना निर्माण, कक्षा शिक्षण कार्यक्रम पर विशेष जोर देना होगा। शिक्षक प्रशिक्षण एवं विकास में निवेश करके, पाठ्यक्रम का नियमित मूल्यांकन एवं अद्यतन करके, आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराकर, छात्रों एवं अभिभावकों से प्रतिपुष्ठि प्राप्त करके शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सकती है। गुणवत्तायुक्त अकादेमिक अनुसंधान को उत्प्रेरित कर शोध की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। प्रस्तुत शोध की सहायता से डाइट शिक्षा संस्थाओं की प्राथमिक शिक्षा के विकास में भूमिका एवं चुनौतियों की जानकारी होने से डाइट में सभी गतिविधियाँ सुचारू रूप से गतिमान हो सकेगी। बजट में सामग्री निर्माण, प्रशिक्षण मद, यात्रा व्यय व दैनिक भत्ता आदि मदों में राज्य सरकार के नियमानुसार भुगतान होना चाहिए। बजट राशि निर्धारण के आधार पर सेवा–पूर्व प्रशिक्षण, सेवारत प्रशिक्षण, शैक्षिक संसाधन विकास एवं शैक्षणिक अनुसंधान का आयोजन किया जाना चाहिए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम में बदलाव के अंतर्गत बदलते समय की मांग के अनुसार वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम में बदलाव करना चाहिए। प्रशिक्षण कार्यक्रम से पहले लक्ष्य निर्धारण, प्रशिक्षण सामग्री का चयन, प्रशिक्षकों का चयन, प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन, प्रतिभागियों का चयन, प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन, आवश्यक संसाधनों का प्रबंधन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए बजट का निर्धारण किया जाना चाहिए। शोध से प्राप्त परिणामों में कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हुए है। जिनका यथोचित उपयोग डाइट शिक्षा संस्थाओं की प्राथमिक शिक्षा के विकास में चुनौतियों के समाधान में किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. Carter, V. Good **Methodology of Educational Research,** New york: century Inc. Appleton
2. Cochran W.G. **Sampling Techniques,** Secondary Education, New Delhi : wiley kasternPvt. Ltd.
3. Fox, David I. (1969). **The Research process in Education** New york : Hall Rinchart and wrston Inc.
4. Good, Bar and Scate (1954). **Methodology of Educaional Research,** New York : Appleton Century Trunk.
5. John W. Best (1986). **Research in Education,** New Delhi : Prentice Hall.
6. Lokesh Koul (2005). **Methodology of Educational Research,** New Delhi : Vikas Publishing House Pvt. Ltd.
7. MHRD (2012). *Restructuring and reorganization of the centrally sponsored scheme onTeacher education, guidelines for implementation.*
8. NCTE (1995). *The national council for teacher Act, 1993.* NCTE (2012). *Teacher education in the 12th plan, Guidelines to support the development.* NCTE (2014). *Report on implementation of justice Vernma commission recommendations.*
9. The Gazette of India (2014). Extraordinary part-III, section-4.
10. ढौंडियाल, सच्चिदानंद; फाटक अरविंद (2003). **शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र**, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
11. सिन्हा एच.सी. (1990). **शैक्षिक अनुसंधान**, दिल्ली : विकास पब्लिक हाउस प्रा.लि.।
12. सुखिया मल्होत्रा (1973). **शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व,** आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।
13. श्रीवास्तव, डी.एन. (2008). **सांख्यिकी एवं मापन**, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।
14. पारीक, प्रो. मथुरेश्वर, सिडाना, डॉ. अशोक नगर (2006). **भारतीय शिक्षा की समस्याएँ एवं नई प्रवृत्तियाँ,** जयपुर : शिक्षा प्रकाशन।
15. https://www.education.gov.in
16. *https://vikaspedia.in*›education